

RISHI VISHWAMITRA VIDYA FOUNDATION

ऋग्वेद मण्डल १, सूक्त १, मन्त्र ५

व्याख्या एवं विश्लेषण

Presented by:

Acharya Kapil

Contact: +91-8756390767

मूल मन्त्र

अ॒ग्नि॒र्होतां॑ क॒विक्र॑तुः स॒त्यश्चि॒त्रश्र॑व॒स्तमः॑ ।
दे॒वो दे॒वेभि॒रा ग॑मत् ॥५॥

पदपाठः अग्निः । होता । कविऽक्रतुः । सत्यः । चित्रश्रवऽतमः । देवः । देवेभिः । आ । गमत् ॥

शब्दार्थ

अग्निः = अग्निदेव, परमेश्वर, या भौतिक ऊर्जा (Fire/Supreme Being/Energy)।

होता = यज्ञ में हवि देने वाला, पदार्थों को देने और ग्रहण करने वाला, आह्वान करने वाला।

कविक्रतुः = क्रान्तप्रज्ञ (अतीन्द्रिय ज्ञान रखने वाला), क्रान्तकर्मा, सर्वज्ञ।

सत्यः = यथार्थ, कभी निष्फल न होने वाला, सत्यस्वरूप।

चित्रश्रवस्तमः = अद्भुत कीर्ति वाला, विविध प्रकार के ज्ञान/यश से युक्त।

देवः = प्रकाशमान, ह्युतिमान, स्वप्रकाशित।

देवेभिः = अन्य देवताओं के साथ, दिव्य गुणों के साथ, विद्वानों के साथ।

आ गमत् = भली-भाँति आएँ, प्राप्त हों (आ गच्छतु)।

आचार्यों के अनुसार भाष्यार्थ

१. आचार्य सायण का भाष्य (याज्ञिक दृष्टिकोण):

यह प्रकाशमान अग्निदेव (देवः), जो यज्ञ को निष्पन्न करने वाले (होता) हैं, जो अतीन्द्रिय ज्ञान और कर्म से युक्त (कविक्रतुः) हैं, जो यजमान को सत्य फल अवश्य प्रदान करने वाले (सत्यः) हैं, और जिनकी कीर्ति अत्यंत अद्भुत और विविध है (चित्रश्रवस्तमः), वे अग्निदेव हवि ग्रहण करने वाले अन्य देवताओं के साथ (देवेभिः) इस यज्ञ में पधारें (आ गमत्)।

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती का भाष्य (आध्यात्मिक एवं यौगिक दृष्टिकोण):

जो स्वप्रकाशित परमेश्वर अथवा सर्वव्यापक भौतिक अग्नि (देवः), सब पदार्थों का दाता या द्योतक (होता) है; जो सूक्ष्म से सूक्ष्म तत्वों को दिखाने वाला, सर्वज्ञ या सर्वविद्यायुक्त वेदशास्त्र का उपदेशक (कविक्रतुः) है; जो सत्यस्वरूप और सत्य का हितकारी (सत्यः) है, तथा जिसका श्रवण या कीर्ति अत्यंत अद्भुत (चित्रश्रवस्तमः) है; वह ईश्वर विद्वानों और दिव्य गुणों के साथ (देवेभिः) हमें सर्वत्र भली-भाँति प्राप्त हो (आ गमत्)।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण (Scientific Approach)

विज्ञान की दृष्टि से 'अग्नि' ब्रह्मांड की ऊर्जा (Energy) और ऊष्मा (Thermodynamics) का प्रतीक है।

- **होता:** ऊर्जा ही सभी रासायनिक और भौतिक प्रक्रियाओं में ग्रहण की जाती है और उत्सर्जित होती है (Absorber & Emitter)।
- **कविक्रतुः:** यह ऊर्जा 'सूक्ष्म कर्म' करने वाली है। क्वांटम स्तर (Quantum level) से लेकर विशाल आकाशगंगाओं तक हर गति इसी के द्वारा निर्देशित होती है।
- **सत्यः:** ऊर्जा संरक्षण का नियम (Law of Conservation of Energy) 'सत्य' है—यह अटल है, सुनिश्चित नियमों के तहत काम करती है और इसके परिणाम हमेशा यथार्थ (Predictable and absolute) होते हैं।
- **चित्रश्रवस्तमः:** इस ऊर्जा की अभिव्यक्तियाँ अत्यंत अद्भुत और विविध हैं—जैसे प्रकाश, ध्वनि, विद्युत, ऊष्मा आदि (Diverse manifestations of energy)।
- **देवेभिः आ गमत्:** यह मूल ऊर्जा प्रकृति की अन्य शक्तियों (Forces of nature) के साथ समन्वित होकर हमारे जीवन और पर्यावरण को संचालित एवं प्रकाशित करे।

व्याकरण एवं निरुक्त (Grammatical Derivation)

- **कविक्रतुः**: यह बहुव्रीहि समास है (कविः क्रतुः यस्य सः)। पाणिनीय सूत्र 'बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम्' (६.२.१) से यहाँ पूर्वपद (कवि) का प्रकृति स्वर सुरक्षित रहता है। 'क्रतु' शब्द कृञ् (करना) धातु से उणादि सूत्र (१.७६) 'कृञः कतुः' द्वारा बना है (हेतुकर्त्ता या कर्त्ता अर्थ में)।
- **सत्यः**: 'सत्सु साधुः सत्यः'। पाणिनीय सूत्र 'सत्यादशपथे' (५.४.६६) से यह निपातित होकर अन्तोदात्त होता है। निरुक्त के अनुसार जो सत् से उत्पन्न होता है और सत् का हितकारी है, वह सत्य है।
- **चित्रश्रवस्तमः**: 'चित्रं श्रवः यस्य' (बहुव्रीहि समास), ततः अतिशयेन चित्रश्रवाः इति चित्रश्रवस्तमः। 'तमप्' प्रत्यय अतिशय (Superlative degree) दर्शाने के लिए प्रयुक्त हुआ है। 'श्रवः' श्रु (सुनना) धातु से असुन् प्रत्यय लगकर बना है जिसका अर्थ यहाँ कीर्ति या अन्न है।
- **देवेभिः**: 'देव' शब्द का तृतीया बहुवचन। वेद में 'बहुल छन्दसि' से 'भिस' को 'ऐस' आदेश नहीं होता, इसलिए 'देवैः' के स्थान पर वैदिक रूप 'देवेभिः' बनता है।
- **गमत्**: गम् धातु। यह छान्दस (वैदिक) प्रयोग है। लोट् लकार (गच्छतु) के अर्थ में लुङ् का प्रयोग या लेट् लकार होकर 'अट्' आगम और 'शप्' विकरण का अभाव (लुक्) होता है, जिससे रूप 'गमत्' सिद्ध होता है।